Impact Factor 6.261 ISSN- 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOW ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

UGC Approved Multidiciplinary international E-research journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

January 2019 Special Issue – 91

जनसंचार एवं तकनीकी के क्षेत्र में हिंदी की उपादेयता

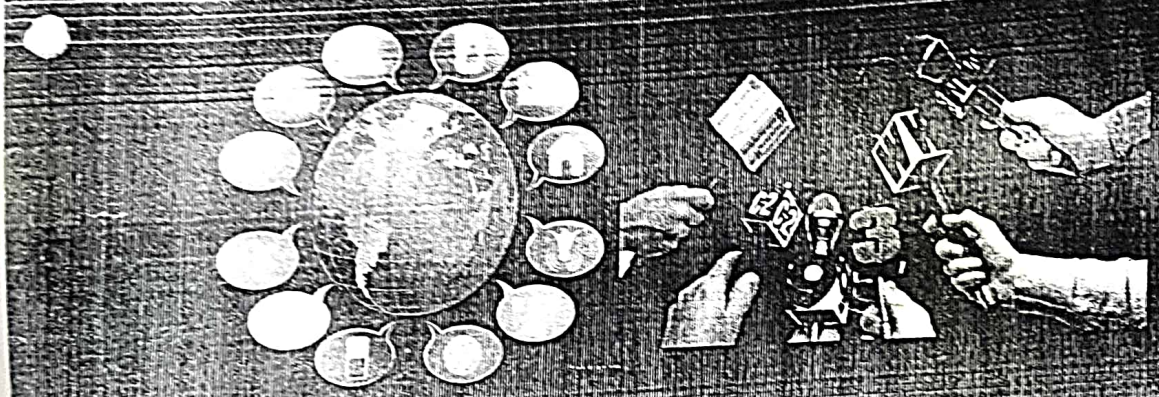

Chief Editor
Dr. Dhanraj T. Dhangar
Assist. Prof. (Marathi)
MGV'S Arts & Commerce college,
Yeola, Dist. Nashik (M.s.) India

Executive Editor of this Issue
Dr. Anil Kale
Asso. Prof. & Head of Hindi Dept.
GM'S Arts, Commerce & Science College,
Narayangaon, Tal. Junnar, Dist. Pune

SWATIDHAN INTERNATIONAL PUBLICATIONS

Visit to - www.researchjourney.net

RESEARCH JOURNEY International Multidisciplinary E-Research Journal | ISSN-2348-7143
Impact Factor - (SJIF) – 6.261, (CIF) - 3.452, (GIF) –0.676 | January 2019 | UGC Approved No. 40705
Special Issue 91 , जनसंचार एवं तकनीकी के क्षेत्र में हिंदी की उपादेयता

38. सरकारी कार्यालय में हिंदी की आवश्यकता........................	डॉ.प्रविण तुळशीराम तुपे	118
39 जनसंचार एवं तकनीक के क्षेत्र में हिंदी की उपादेयता....... विज्ञापनों में हिंदी भाषा का सशक्त योगदान	कांचन शेंदुर्णीकर ,	120
40 [illegible] माध्यम : विज्ञापन और हिंदी........................	डॉ.योगेश विठ्ठल दाणे	123
[illegible] परिदृश्य	डॉ. भाऊसाहेब [illegible]	127
42 [illegible] और हिंदी	डॉ. मिलिंद कावळे	130
43. फिल्म क्षेत्र और हिंदी	सौ. योगिता अमोल देशपांडे	132
44. विज्ञापन क्षेत्र और हिंदी	कु. छाया रत्नाकर पांढरकर	134
45. नवइलेक्ट्रॉनिक मीडिया एवं हिंदी अध्यापन	डॉ. शेख मोहम्मद शाकिर	137
46. फिल्म क्षेत्र और हिंदी	श्रीम. जयश्री अर्जुन माथेसुळ	139
47. हिंदी की विभिन्न प्रयुक्तियाँ	प्रा.पटेकर विश्वनाथ चंद्रकांत	142
48. हिन्दी के विकास में नवइलेक्ट्रानिक माध्यमों का योगदान	आर. अरुणा	145
49 अनुवाद क्षेत्र और हिंदी	अश्विनी महादेव जाधव	148
50 विज्ञापन क्षेत्र और हिंदी भाषा (मुद्रित, श्रव्य, दृकश्रव्य माध्यम)......	प्रा. गणेश दुंदा गभाले	150
51 [illegible] जनसंचार माध्यम और हिंदी	सौ. विद्या शामराव चौगले	153
52 [illegible] तकनीकी के क्षेत्र में हिंदी की उपादेयता	अंबेकर वसीम	156
53 [illegible] तकनीकी के क्षेत्र में हिंदी की उपादेयता	प्रा. शोभा कांकाटे	159
54. जनसंचार माध्यमों में रेडियो	राजेंद्र विट्ठल वरप	161
55. विज्ञापन : जनसंचार का सशक्त माध्यम........................	प्रा. बी. एस भुजाडे	163
56. हिंदी के विकास में टेलिविजन का योगदान........................	सरला सूर्यभान तुपे	165
57. विज्ञापन क्षेत्र और हिंदी (मुद्रित, श्रव्य, दृक श्रव्य)	कविता दत्तु चव्हाण	167
58. इलेक्ट्रॉनिक मीडिया और हिंदी	अविनाश मारूती कोल्हे	170
59 जनसंचार माध्यम में हिंदी : रोजगार के अवसर	डॉ. शरद भा. कोलते	172
60. अनुवाद क्षेत्र और हिंदी	श्रीगिरे जयश्री बालाजी	175
61 जनसंचार की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि	डॉ. रवीन्द्र सिंह	180
62. जनसंचार एवं इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के विविध आयाम–एक दृष्टि....	डॉ. प्रीति आत्रेय	183
63 जनसंचार माध्यमों में हिंदी की उपादेयता............................	डॉ. भगत सारिका	185
64 [illegible] फिल्म : साहित्य व समाज	डॉ. दिग्विजय टेंगसे	188
65 [illegible] प्रिंट मीडिया के विकास में हिन्दी का योगदान......	डॉ. अर्चना चतुर्वेदी	190
66. इलेक्ट्रॉनिक एवं प्रिंट मीडिया और हिंदी	डॉ. नानासाहेब जावळे	192
67. नव इलेक्ट्रॉनिक मीडिया और हिंदी (कम्प्यूटर और इंटरनेट प्रणाली के विशेष संदर्भ में)	गणेश ताराचंद खैरे	195
68. इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में हिंदी की उपादेयता........................ (विज्ञापन के सदर्भ में)	प्रा. डॉ. मनाली सुर्यवंशी	198
69 नवइलेक्ट्रॉनिक मीडिया और हिंदी	प्रा. संदिप बळवंत देवरे	201
70 [illegible] माध्यम और सामाजिक जागरूकता............................	प्रा. डॉ. व्ही. डी. सूर्यवंशी	203
[illegible] पत्रकारिता का योगदान	डॉ. जालिंदर इंगले	206
[illegible] संदर्भ में	डॉ. धन्या. के. एम	208
[illegible] माध्यम एवं रोजगार के अवसर................	डॉ.राजाराम कानडे	210
[illegible] और हिंदी	प्रा. ललिता भाऊसाहेब घोडके	213

RESEARCH JOURNEY International Multidisciplinary E-Research Journal | ISSN-2348-7143
Impact Factor - (SJIF) – 6.261, (CIF) - 3.452, (GIF) –0.676 | January 2019 | UGC Approved No. 40705
Special Issue 91 , जनसंचार एवं तकनीकी के क्षेत्र में हिंदी की उपादेयता

जनसंचार - माध्यम और सामाजिक जागरूकता

प्रा. डॉ. व्ही. डी. सूर्यवंशी
हिंदी विभाग अध्यक्ष, कर्मवीर भाऊसाहेब हिरे कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय, निमगाव, तह. मालेगांव, जिला - नाशिक (महाराष्ट्र)

प्रस्तावना -

वर्तमान समय में संचार माध्यमों ने हमारी जीवन पध्दति को पूर्णतः बदल दिया है। हमारी सोच और जीवनशैली को बदल दिया है। संचार के प्रमुख माध्यमों ने मनुष्य के जीवन को एक ओर सुगम बनाया है, तो दूसरी ओर अनेक घातक तथ्यों का आविष्कार कर समाज में बुनियादी परिवर्तन लाने का कार्य किया है। शिक्षा, शोध, संगीत, कला, चित्रकारिता, राजनीति, धर्म, दर्शन, अर्थ, नीति, आदि की सही जानकारी प्रस्तुत कर समाज को सही दिशा देने को श्रेय इन माध्यमों को जाता है। संचार एक ऐसी प्रक्रिया है। जिसमें दो या दो से अधिक लोगों के बीच विचारों, अनुभवों, तथ्यों और प्रभावों का इस प्रकार आदान-प्रदान होता है जिससे दोनों को संदेश के बारे में सामान्य ज्ञान होता है। इस प्रक्रिया के द्वारा संप्रेषक और संग्राहक के बीच सामंजस्य तथा जागरूकता पैदा की जाती है और जनता के ज्ञान, विचार और वृत्ति को निर्मित, विकसित और परिवर्तित किया जाता है।

जनसंचार का अर्थ -

जनसंचार का अर्थ है वृहत जन-समुदाय है जिसे संदेश प्रेषित किया जाता है। यह जनसमुदाय समूह के रूप में कहीं एकत्र न होकर बिखरा होता है। हर्बर्ट ब्लूमर ने जन शब्द को भीड समूह और जनता से भिन्न मानते हुए परिभाषित किया था कि जन इन सबसे भिन्न अर्थ रखता है।

जन संचार की परिभाषा -

जनसंचार को परिभाषित करते हुए जोसेफ डिविटोने कहा था ``मास कम्युनिकेशन इज द प्रोसेस ऑफ ट्रान्समिटिंग इनफॉर्मेशन आयडियाज एंड एटीटयुडस ऑफ मैनीपीपल यूजीअली थ्रू ए मशीन।``

एकविन एमदी -

``जनसंचार एक व्यक्ति से दूसरे को सूचनाओं, विचारों और दृष्टिकोणें को संप्रेषित करने की एक कला है``

जनरीमल्ल पारिख -

जनसंचार का अर्थ है जन के लिए संचार के माध्यम इसमें जनता न तो निष्क्रिय भागीदार होती है और न ही प्रत्येक संप्रेषित संदेश को आसानी से स्विकार कर लेती है बल्कि इन माध्यमों को प्रभावित भी करती है और प्रभावित भी होती है। वर्तमान में जनसंचार माध्यमसे गृहण लोक समूह सदस्य के रूप में नही करते बल्कि अकेले या दो-चार लोगों के बीच करते है। आज के विकसित प्रोद्योगिको के युग में व्यक्ति घर बैठे ही अकेले फिल्म देख सकता हं और घर बैठे ही दुनिया से संपर्क कर सकता है।

परंपरागत जनसंचार -

लोकगीत, लोकनाटयों की परंपरागत विद्याएँ सदियों से जनसंचार का सशक्त माध्यम रही है। ये सुगम, सस्ती और जनसामान्य के अधिक निकट रही है। दूसरी और सामूदायिक भागीदारी के लिए सुलभ होने के कारण इलेक्ट्रॉनिक और प्रिंट मीडिया से कही बेहत्तर तरीके से ये संदेश का संप्रेषण कर पाती है।

संचार के पारंपारिक माध्यम आम लोगों के माध्यम होते है। समाज के धार्मिक और सांस्कृतिक पक्ष से संबंध्द पारंपारिक संचार - माध्यमों की विषयवस्तु अति समृध्द होती है। उनकी अभि व्यंजना पध्दति भी लोगों के लिए सहज ग्राह्य होती है साथ ही उनमें लोगों को प्रभावित करने की क्षमता भी अधिक होती है।

पीढी दर पीढी से जनसंचार का माध्यम चलता आ रहा है। मनुष्य में बाल्यकालसे जनसंचार माध्यम का परिवेश सूलभ हो जाता है। पारंपारिक माध्यम अपनी मौलिकता के कारण विश्वसनीय होते है। जनजीवन से निकटता भी उन्हें प्रभावशाली बनाती है। भारत के पारंपारिक जन माध्यम हमारी ग्रामीण संस्कृति की देन है। समूह को एक साथ बाँधे रखने का महत्वपूर्ण दायित्व ... जब चौपालों पर सुनी सुनाई जाती थी तो वे जन समूह को एक साथ बाँधे रखने ... नही पा सकते। लोकगीतों का गायन ... रेडिओ और दूरदर्शन के प्रसारण भी इस वाचिक परंपरा की गुणवत्ता को नही पा सकते। अधिकांश लोकनृत्य कृषि-कार्य, फसलों के तैयार होने पर- और ... की प्रस्तुति भी भारतीय पारंपारिक संचार माध्यम है। ... पर्वों पर प्रस्तुत किए जाते है। पंजाब का भांगडा, गुजरात का गरबा, राजस्थान का गैर नृत्य ... गांव-गांव घूमकर

RESEARCH JOURNEY International Multidisciplinary E-Research Journal | ISSN : 2348-7143
Impact Factor - (SJIF) - 6.261, (CIF) - 3.452, (GIF) - 0.676
Special Issue 91 , जनसंचार एवं तकनीकी के क्षेत्र में हिंदी की उपादेयता | January 2019 | UGC Approved No. 40705

लोक नाट्यों की भारत में विराट परंपरा रही है। उत्तरप्रदेश में रामलीला-रासलीला नौटंकी, स्वांग प्रचलित है, तो महाराष्ट्र में तमाशा, बंगाल में जात्रा और आंध्र में बुर्रकथा प्रचलित है। गुजरात में भवई कलाकारों के समूह गाँव-गाँव घूमकर लोगों का मनोरंजन करते है। छत्तीसगढ़ में "पंडवानी" और राजस्थान में "पाबू जी की पड़" "गवरी" प्रसिद्ध है। भारत के प्रसिद्ध शास्त्रीय नृत्य, भरतनाट्यम्, मणिपुरी और कथकली भी पारंपारिक संचार - माध्यम के अंतर्गत है जो प्राचीन कथाओं में निहित संदेशों को संगीत वाद्य और अभिनय मुद्राओं के साथ प्रस्तुत करते है।

पारंपारिक माध्यमों में एक और महत्वपूर्ण माध्यम कठपुतली प्रदर्शन है जो सृजनात्मक प्रयोगों के तहत मनोरंजन कलाकार का रूप लेती है और जो दर्शक के मन पर गहरा प्रभाव उत्पन्न करने में सक्षम है। वस्तुतः ये हस्त-कौशल पर निर्भर होती है पर इनका संचालन कठपुतलीकार की सर्जनात्मक प्रतिभा का भी परिचायक है। उड़ीसा में भी इन पुतलिकाओं का खेल गाँव-गाँव में खेला जाता है। सहजता, सुगमता और सुलभता के चलते पारंपारिक संचार - माध्यम सामाजिक जागृकता के वाहक संवाहक भी हो सकते है। इसकी सार्थकता आजादी के आंदोलन के समय सिद्ध हुई जब गाँवों और सड़कों पर निकलने वाली प्रभात फेरियाँ नौटंकियों और स्वांगों ने आंदोलन की लौ लगातार प्रज्वलित रखी। सामाजिक समस्याओं, जैसे बाल-विवाह, बहु-विवाह, जनसंख्या विस्फोट, निरक्षरता, नशा, मदिरापान, साम्प्रदायिक विद्वेष, कुपोषण, अस्पृश्यता, जाति प्रथा, दहेजप्रथा, आदि के विरोध भी बात जितने सशक्त स्वर में पारंपारिक संचार - माध्यम व्यक्त कर सकते है वैसा अन्य माध्यम नहीं कर सकता।

पारंपारिक संचार की प्रमुख विशेषताएँ उनकी स्रोत से निकटता, स्थानीयता और विश्वसनीयता है। बोलचाल की भाषा में रोजमर्रा की जिंदगी के महोल में कही गई बात के कारण संदेश निश्चित रूप से प्रभावशाली होता है। स्वास्थ्य विभाग, शिक्षा विभाग, समाजकल्याण विभाग ने अपनी कई योजनाओं को पारंपारिक माध्यमों से प्रसारित किया और सकारात्मक परिणाम भी उन्हें मिले। आज के रेडियो और दूरदर्शन जैसे जनसंचार - माध्यम पारंपारिक संचार के ही विकसित रूप है।

जनसंचार के माध्यम -

जनसंचार के अनेक उपकरण हैं जिनमें प्रमुख रूप से समाचारपत्र, पत्रिकाएँ, पुस्तकें, रेडियो, दूरदर्शन और केबल टी.वी. आदि सम्मिलित है। मुख्य रूपसे इन्हे दो श्रेणियों में बाँटा जा सकता है। मुद्रित माध्यम और इलेक्ट्रॉनिक माध्यम।

मुद्रित माध्यम (Print Media) -

सन 1450 में जर्मनी में जोहांस गुटेनबर्ग के मुद्रण का अविष्कार करते ही वाकर मनुष्य के लिये संचार वरदान बन गया। विकसित देशों में समाचारपत्र जीवन की अनिवार्य जरूरतों में गिने जाते है। अमेरिका में 95 प्रतिशत लोक समाचार पत्र पढते है, उसके बाद रूस की गणना होती है। भारत में 1780 से अखबार का प्रकाशन हो गया था। आज देश के हर प्रांत क्षेत्र और भाषा में दैनिक, साप्ताहिक और मासिक पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन तेजी से हो रहा है। हर वर्ष इनकी प्रसार की संख्या में वृध्दि हो रही है। अधिक से अधिक जानकारी हासिल करने के उद्देश्य से समाचार पत्र भी हर वर्ग के लिए उनकी रुचियों के अनुरूप सामग्री प्रस्तुत कर रहे हैं। खेल, फिल्म, कला, बाजारभाव राजनैतिक उथल-पुथल, जीवन के हर क्षेत्र से संबंधित समाचार समाचारपत्रों द्वारा प्रदान किए जाते है। जनमत को सशक्तता, सांस्कृतिक चेतना, मूल्यों को स्थापित करने में समाचारपत्र सहायक हुए है।

रेडियो (Radio) -

इलेक्ट्रॉनिक माध्यम के उपकरणों में मुद्रित माध्यम से अधिक तीव्रता से और दूरदराज तक संदेश पहुँचाने की शक्ति है। रेडियो इनमें सबसे सस्ता और पोर्टेबल उपकरण है। उन्नीसवीं सदी के अंत में मार्कोनी द्वारा आविष्कृत [illegible] ने संचार क्षेत्र में क्रांति उत्पन्न कर दी। समाचारों, गीत, संगीत, नाटक, रूपक आदि प्रस्तुत कर रेडियो हर [illegible] गया था।

रेडियो डाटा पेजिंग सर्विस (Radio Data Paging Service) - रेडियो पेजिंग वस्तुतः एक चलती फिरती वायरलेस प्रणाली है। रेडियो पेजिंग सेवा न्यूयार्क में 1951 में तथा जापान में 1968 में तथा लंदन में 1977 में प्रारंभ हुई। भारत में यह सेवा 1 जनवरी 1968 को प्रारंभ हुई। यह सेवा आकाशवाणी के एफ.एम. ट्रान्समीटरों के द्वारा चुने हुए शहरों में उपलब्ध है। इसके माध्यम से संदेश भेजने के लिए सबसे पहले पेजिंग ऑपरेटर को फोन करना पड़ता है। ऑपरेटर आपसे आपका कोड नम्बर पूछ कर उसे पी.सी.टी. (पेजिंग-कंट्रोल टर्मिनल) में फीड कर देगा। पी.सी.टी. से आपका संदेश [illegible] केबिल की सहायता से आर.डी.एस. एनकोडर में पहुँचेगा। यह एनकोडर इस संदेश को इन्कोड करके एफ.एम. ट्रान्समीटर में डाल देता है और पेजर बीप ध्वनि बनाकर अपने अधिकारी को सतर्क कर देता है जिससे कि संबंधित अधिकारी बटन दबाकर पूरा संदेश पढ लेता है। यदि किसी कारणवश संदेश पढना संभव नहीं है तो उसे मेमोरी में डाला जा सकता है। साथ ही अगर आपके पास एक विशेष तरीके का फोन या कम्प्यूटर हो तो बिना ऑपरेटर की सहायता के संदेश पेजर पर दिए जा सकते है।

RESEARCH JOURNEY International Multidisciplinary E-Research Journal | ISSN- 2348-7143
Impact Factor - (SJIF) - 6.261, (CIF) - 3.452, (GIF) -0.676 | January 2019 | UGC Approved No. 40705
Special Issue 91 , जनसंचार एवं तकनीकी के क्षेत्र में हिंदी की उपादेयता

दूरदर्शन (Television) -

मार्शल मेक्लुहान के अनुसार सूचना क्रांति में जो महत्त्व गुटेनबर्ग द्वारा आविष्कृत मुद्रण का था उससे भी अधिक महत्त्व दृश्य- श्रव्य माध्यम दूरदर्शन का है प्रकाश, रंग और ध्वनि से साक्षात्कार करता टेली-दर्शक सजीव विवरण को अधिक रूचिकर पाता है। इसीलिए दूरदर्शन, सूचना, शिक्षण और मनोरंजन का प्रमुख साधन बनता गया। पर टेलीविजन काफी महंगा माध्यम है।

रेडियो और दूरदर्शन दोनों ही निरक्षर व्यक्तियों तक पहुँचने के लिए अति उत्तम साधन सिध्द हुए हैं। रेडियो तो संचार का काफी सस्ता साधन भी सिध्द हुआ है। उसकी अनय विशेषता उसका विद्युत रहित क्षेत्र में भी सुना जा सकना और समाचार-स्थल अथवा घटना-स्थल से ही बिना अधिक तामझाम के प्रसारण कर सकना भी था। दूरदर्शन की अधिक महंगी उपकरण सामग्री विद्युत की अनिवार्यता के बाद भी दृश्य शक्ति के कारण लोकप्रियता का कारण रही है।

निष्कर्ष -

आज जनसंचार माध्यम से कोई क्षेत्र अछुते नहीं रहे है। आज वैश्वीकरण ने जनसंचार माध्यमों को अपरिमित संभावनाएँ दी है। जनसंचार माध्यमों के कारण दुनिया बहुत छोटी हो गयी है, एक गांव बन गयी है, जहाँ सब कोई लगभग सब कुछ जान सकते है। आज विश्व में भारत को नयी पहचान मिली है वह सूचना प्रोद्योगिकी में उसकी प्रगति से ही है। आज ग्रामीण क्षेत्र जनसंचार के क्रांति के प्रवाह में आ चुका है। गांव में सामाजिक परिवेश भी धीरे - धीरे बदलना शुरू हो गया है। इस प्रकार युवा भी आज जनसंचार माध्यमों का प्रयोग करते हुए अंतर्राष्ट्रीय ज्ञान प्राप्त करते है। 'ग्लोबल-विलेज' की छवि विकसित करने में जनसंचार माध्यमों की अहम् भूमिका रही है।

संदर्भ -

1) मिडिया लेखन - डॉ. रमेशचंद्र त्रिपाठी, डॉ- पवन अग्रवाल.
2) रेडिओ और दूरदर्शन पत्रकारिता, डॉ- हरिमोहन.
3) हिंदी पत्रकारिता - कल आज और कल, डॉ. सुरेश गौतम.
4) प्रतियोगिता दर्पन - पत्रिका 2017.